सिद्धाश्रम साधना के चौबीस दुर्लभ प्रयोग

स्वामी तत्वानन्द

अरविन्द प्रकाशन
जोधपुर।

चेतावनी

साधना कार्य एक कठिन कार्य है, असफलता मिलने पर भी साधक को तब तक बराबर प्रयत्न करते रहना चाहिए, जब तक कि उसे सफलता न मिल जाय, इस पुस्तक में जो भी सिद्धियां और साधनाएं दी है, वे प्रामाणिक है, पर सफलता और असफलता के मूल रूप में साधक का विवेक और सामर्थ्य शक्ति मुख्य से प्रभावक रहती है, अतः इन सिद्धियों की सफलता-असफलता के प्रति प्रकाशक, लेखक या सम्पादक किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है।

गुरू-पूजन

सर्वप्रथम प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में उठकर स्नान सन्ध्यादि से निवृत्त होकर (गणपति और इष्टदेव पूजा से भी पहले) सर्वप्रथम गुरु का ध्यान करे यदि गुरुदेव का चित्र हो तो वह सामने रखे, और चित्र न होने की स्थिति में नारियल को सामने रखकर उसे गुरू मानकर हृदय में 'गुरुदेव' का ध्यान करे, भैरव तन्त्र के अनुसार—

अथातः प्रातरुत्थाय शय्यास्थ सु समाहितः।
शिरस्थ-कमले ध्यायेत् स्व गुरुं शिव रूपिणिम् ॥

अर्थात-सिर स्थित सहस्र दल कमल के मध्य में, हंसपीठ के ऊपर गौर शरीर, प्रसन्न मुखमण्डल, शांत मूर्ति स्वशक्ति सहित शिव स्वरूप गुरुदेव का ध्यान करे—

फिर दाहिना हाथ अपनी नाभि पर रखकर उस पर बांया हाथ रखकर नाभिस्तल में गुरुदेव का ध्यान करे—

ॐ वराभ्यं करं शांतं शुक्ल वर्णं स शक्तिकम्।
ज्ञानानन्द मयं साक्षात् सर्व ब्रह्म स्वरूपकम् ॥

अर्थात—शुक्ल वर्ण वाले गुरुदेव साक्षात ब्रह्म एवं ज्ञान स्वरूप हैं, वे अपनी साधनात्मक शक्ति सहित सहस्रार स्थित होकर शिष्य को एक हाथ से वर तथा दूसरे हाथ से अभय प्रदान कर रहे हैं।

फिर नेत्र बन्द कर गुरुदेव का इस प्रकार ध्यान करे कि वे सामने स्पष्ट हों

प्रातः शिरसि शुक्लाब्जे द्विनेत्रं द्विभुजं गुरूं।
प्रसन्न वदनं शांतं स्मरेत् तन्नाम पूर्वकं ॥

इसके बाद गुरुदेव का आह्वान करे—

ॐ स्वरूप निरूपण हेतवे (अमुकं) श्री गुरवे नमः ।

ॐ स्वच्छ प्रकाश विमर्श हेतवे (अमुकं) श्री परम गुरवे नमः ।

ॐ स्वात्माराम पंजर विलीन तेजसे श्री परमेष्टि (अमुकं) गुरवे नमः । समर्पयामि ।

यहां (अमुकं) के स्थान पर अपने गुरु का नाम उच्चारण करे ।

इसके बाद गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और ताम्बूल — इन छः उपचारों से गुरुदेव का संक्षिप्त पूजन करना चाहिये ।

(१) पृथ्वी को गन्ध अर्थात चन्दन स्वरूप माने । (२) आकाश को पुष्प स्वरूप मानें । (३) वायु को धूप स्वरूप मानें । (४) अग्नि को दीप स्वरूप मानें । (५) अमृत को नैवेद्य स्वरूप मानें । (६) वातावरण को ताम्बूल स्वरूप मानें ।

पूजा

गन्ध– दोनों हाथों के अंगुष्ठ और कनिष्ठा उंगलियों के योग से गुरुदेव को गन्ध समर्पित करे—

ऐं कनिष्ठाभ्यां लं पृथिव्यात्मकं गंधं स शक्तिकं श्रीगुरवे समर्पयामि नमः

पुष्प– दोनों हाथों के अंगुष्ठ और तर्जनी के योग से पुष्प समर्पित करे—

ऐं अंगुष्ठाभ्यां हं आकाशात्मकं पुष्पं स शक्तिकं श्री गुरवे समर्पयामि नमः

धूप– दोनों हाथों की तर्जनी और अंगुष्ठ के सहयोग से धूप समर्पण करे—

ऐं तर्जनीभ्यां यं वाय्वात्मकं धूपं स शक्तिकं श्री गुरवे समर्पयामि नमः ।

दीप– दोनों हाथों की मध्यमा और अंगुष्ठ के योग से दीप दिखायें—

ऐं मध्यमाभ्यां रं वन्ह्यात्मकं दीपं स शक्तिकं श्री गुरवे समर्पयामि नमः ।

नैवेद्य– दोनों हाथों की अनामिका और अगुष्ठ के योग से नैवेद्य समर्पित करे

ऐं अनामिकाभ्यां अमृतात्मकं नैवेद्यं स शक्तिकं श्री गुरवे समर्पयामि नमः

ताम्बूल– दोनों हाथ जोड़कर ताम्बूल प्रदान करे—

ऐं करतलकर पृष्ठाभ्यां सर्वात्मकं ताम्बूलं स शक्तिकं श्री गुरवे समर्पयामि नमः ।

इस प्रकार छः उपचारों से गुरुदेव का पूजन करे, यदि ये पदार्थ उपलब्ध हों तो वे पदार्थ गुरुदेव के चित्र के आगे समर्पित करे, और न हो तो मानसिक रूप से ऊपर लिखे अनुसार मानसिक उपचार पूजन समर्पित करे, इसके बाद करन्यास करे—

	करन्यास	अंगन्यास
श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
गु	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
र	मध्याभ्यां नमः	शिखायै वषट्
वे	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
न	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्रत्रयाय वौषट्
मः	करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

करन्यास में सभी उंगलियों को तथा अंगन्यास में सारे शरीर को स्पर्श करना चाहिये ।

जप– इसके बाद माला से 'गुरु मन्त्र' का जप करे, गुरु मन्त्र है "श्री गुरुवे नमः" ।

पर यदि शिष्य दीक्षित हो तो गुरु मन्त्र— "ॐ (गुरु नाम) गुरुभ्यो नमः" मन्त्र जप करे, एक माला या १०८ बार उच्चारण करे, यदि माला न हो तो कर माला से भी जप कर सकते हैं ।

गुरू पंक्ति नमस्कार— इसके बाद गुरू पंक्ति नमस्कार करे—

ॐ गुरूभ्यो नमः ।

ॐ परमगुरूभ्यो नमः ।

ॐ परात्पर गुरूभ्यो नमः ।

ॐ सर्व गुरूभ्यो नमः ।

इसके बाद 'ऐं' मन्त्र का १०८ बार जप कर गो योनि मुद्रा (दांये या बांये हाथ की मुट्ठी बांधने से कनिष्ठिकांगुली के मूल के नीचे के भाग में जो योनि की आकृति बनती है, उसे 'गो योनि मुद्रा' कहते हैं) से गुरु के चरणों में जप समर्पण करे।

फिर गुरू को प्रणिपात होकर नमस्कार करे—

अखण्ड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं तपः ।
तत्व ज्ञानं परं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

नमोऽस्तु गुरवे तस्मै इष्ट देव स्वरूपिणे ।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसार संज्ञकम् ।।

भव-पाश विनाशाय ज्ञान दृष्टि-प्रदर्शिने ।
नमः सद्गुरवे तुभ्यं भुक्ति मुक्ति प्रदायिने ।।

नराकृति-परब्रह्म रूपाया ज्ञान-हारिणे ।
कुलधर्म-प्रकाशाय तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

इस प्रकार गुरुदेव को नमस्कार कर वाग्भव बीज 'ऐं' द्वारा तीन बार प्रणाम करे, फिर समय हो तो स्तोत्र, कवच आदि का पाठ कर पुनः 'श्री गुरुवे नमः' कह कर गुरुदेव को नमस्कार करे।

प्रवेश

सिद्धाश्रम मानव जीवन का वरदान है, यह एक ऐसा स्थान है, जहां सामान्य मानव भी प्रयत्न कर अपने जीवन को इतना दिव्य बना सकता है, कि वह साधक की श्रेणी में आ जाय, और यदि उसे अपने जीवन में योग्य गुरु मिल जाते हैं, तो वह उनके चरणों में बैठकर कुछ ऐसी साधनाएं सिद्ध कर सकता है, जो अपने आप में अद्वितीय होती है, इन साधनाओं में ही कुछ ऐसी भी साधनाएं हैं,जिसके द्वारा कुण्डलिनी जागरण,सहस्रार जागरण और उससे भी आगे बढ़कर जीवन को योगमय बनाने में समर्थ हो पाता है, ऐसा प्रयत्न करने पर ही एक सामान्य व्यक्ति भी सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकता है।

सही अर्थों में कहा जाय तो सिद्धाश्रम पूरे ब्रह्मांड का स्वर्ग एवं आधार स्थल है, आज भी इस दिव्य धाम में हजारों-हजारों वर्षों की आयु प्राप्त योगी और साधक विद्यमान है, जिनकी तपस्या और प्रभाव से पूरे विश्व में आध्यात्मिक लहर बनी हुई है, जिनके प्रयत्नों से ही अन्याय पर न्याय, बुराई पर अच्छाई तथा अंधकार पर प्रकाश की विजय होती है, ऐसे देवदूतों का दर्शन सौभाग्यशाली ही प्राप्त कर पाते है।

सिद्धाश्रम के बारे में कई ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है, परन्तु यह आश्रम सर्वथा गोपनीय और दुर्लभ रहा है, जिसके कई जन्मों के पुण्य उदय होते हैं, जो सदाचारी, कलंक रहित माता-पिता का भक्त एवं गुरु की सेवा करने वाला होता है, वही सिद्धाश्रम में जाने के लिए समर्थ हो पाता है, जो व्यक्ति अपने जीवन में पक्का निश्चय कर लेता है, कि मुझे जीवन में इस दिव्य सिद्धाश्रम में पहुंचना ही है, और इस धारणा को लेकर साधना प्रारम्भ करता है, तभी वह साधना के बल पर सिद्धाश्रम में पहुचता है।

सिद्धाश्रम में कौन जा सकता है ?

१- जो अपने जीवन में उच्च और दिव्य पथ का अनुगामी होता है,

जो अपने जीवन में मनुष्य जीवन का सफल बनाने का संकल्प लेता है, वही सिद्धाश्रम में प्रवेश पाने का अधिकारी होता है।

२- जो अपने माता-पिता की सेवा करने वाला तथा नित्य उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का आकांक्षी होता है, वही इस दिव्य धाम में जाने में समर्थ हो पाता है।

३- जो अपने जीवन में योग्य गुरु धारण कर बिना किसी स्वार्थ के उनकी तन-मन-धन से सेवा करता है, और उनकी आज्ञा को जीवन का सौभाग्य समझता है, वह सशरीर इस सिद्धाश्रम में जाने का अधिकारी होता है।

४- जो वेदों, शास्त्रों और साधु संतों में आस्था रखता है, जिसके जीवन में पुण्य, समाज सेवा और लोकोपयोगी भावना होती है, वही इस सिद्धाश्रम में जाने में समर्थ हो पाता है।

५- जो मन्त्र-तन्त्र योग विज्ञान आदि में आस्था रखता है, और अपने जीवन में इन मन्त्र-तन्त्र के माध्यम से पूर्णता प्राप्त करने का आकांक्षी होता है, वही इस दिव्य धाम में जाने का समर्थ अधिकारी होता है।

६- जो अपने शरीर को साधता है, जो साधनाएं सम्पन्न कर सकता है, वह अवश्य ही इस पुण्य भूमि में प्रवेश पा सकता है।

७- जिसको उच्च कोटि के मन्त्र साधना आदि का ज्ञान होता है, और जिसका उच्चारण शुद्ध एवं स्पष्ट होता है, जो एक आसन पर बैठकर निश्चित मन्त्र जप सम्पन्न कर सकता है, वह सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकता है।

८- जो व्यसनों से दूर रहता हो या जिसमें इतनी क्षमता हो कि वह गुरु आज्ञा से व्यसनों को छोड़ सके, जो व्यभिचार-गमन, मद्यपान आदि कुटेवों से निष्प्रह रह सके जिसके जीवन में छल, कपट, असत्य भाषण आदि न हो, वह इस महत्वपूर्ण आश्रम में जाने का अधिकारी होता है।

९- जो योग्य गुरु से दीक्षा प्राप्त कर चुका होता है, और जिसे कुण्डलिनी जागरण का ज्ञान होता है, जिसने इस क्षेत्र में कुछ कार्य किया हो और जो अपने जीवन को सहस्रार जागरण तक पहुंचाने की क्षमता रखता हो, वह निश्चय ही इस पुण्य भूमि में सशरीर प्रवेश कर सकता है।

१०- जिसके घर में सुख शांति हो, जो थोड़ी सी आमदनी से भी सन्तुष्ट रहता हो, वह इस साधना-स्थल तक पहुंच सकता है।

११- जिसका लक्ष्य बहुत ऊंचा होता है, जिसका मन चंचल एवं ढुलमुल नहीं होता जो स्थिर एवं स्वस्थ मनोवृत्ति से आगे बढ़ सकता है, जो लोगों की आलोचनाओं और व्यर्थ के प्रवाह में बहता नहीं, जो गम्भीर स्वस्थ एवं प्रसन्नचित होता है, वह इस क्षेत्र में प्रवेश पा सकता है।

१२- जिसके जीवन में गुरु ही सब कुछ होता है, और गुरु आज्ञा को जीवन की सर्वोच्च आज्ञा मानकर तदनुकूल आचरण करता है, वह निश्चय ही सिद्धाश्रम में प्रवेश पाने में समर्थ होता है।

सिद्धाश्रम साधना

सिद्धाश्रम से संबंधित शास्त्रों में कई साधनाएं बताई है, परन्तु सभी साधनाओं के नियम उपनियम लगभग एक जैसे ही है, अतः साधना प्रारम्भ करने से पूर्व इन नियमों-उपनियमों के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए और जीवन में तथा साधनाकाल में इन नियमों का दृढ़ता के साथ पालन करना चाहिए, ऐसा होने पर ही वह सिद्धाश्रम से संबंधित साधना में सफलता पा सकता है।

१- जितने दिन की भी साधना हो उतने दिन पूरी तरह से साधना के लिए ही समर्पित हो उस अवधि में अन्य सांसारिक क्रिया आदि में व्यस्त न हो, साधनाकाल में नौकरी, व्यापार, लेन-देन आदि कार्य न करें।

२- साधनाकाल में सर्वथा मौन रहे, केवल प्रातःकाल ६ से ७ बजे

मध्याह्न १ से २ तथा सांयकाल ८ से ९ के बीच ही बोल सकता है, इसके अलावा दिन रात के बाकी २१ घण्टे सर्वथा मौन रहे, पर गुरु और देवता से बातचीत करने में कोई दोष नहीं है, यदि वे स्वयं बातचीत करने में पहल करते हों।

३- इन तीन घण्टों के बातचीत के समय में भी झूठ, पर निन्दा, पापपूर्ण वार्तालाप आदि वर्जित है, यह भी जरूरी नहीं है, कि इन तीन घण्टों में बोले ही, आवश्यकता पड़ने पर ही वह बोले।

४- साधनाकाल में खुले वस्त्र तथा ऊनी वस्त्र प्रयोग में लाये जा सकते हैं, परन्तु वे दोषयुक्त भड़कीले चमकदार न हों।

५- साधनाकाल में किसी प्रकार का व्यसन सर्वथा वर्जित है, यर यदि बहुत अधिक आदत पड़ी हुई हो तो गुरु आज्ञा से ऊपर दिये हुए छूट के समय में व्यसन करे, पर पुनः स्नान करनी आवश्यक है।

६- साधनाकाल में पूर्णतः ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करे, पर स्त्री से बिल्कुल बात न करे, स्वयं की पत्नी से भी हंसी-मजाक, ठिठोली या गप-शप आदि वर्जित है।

७- यथासम्भव अपने या पत्नी के हाथ से बना हुआ भोजन ही करे, यदि बहुत अधिक बाधा हो तो शुद्ध वर्ण के ब्राह्मण परिवार की किसी सदस्या के हाथ का बनाया हुआ भोजन लिया जा सकता है, दिन रात में केवल एक समय भोजन करना ही मान्य है, पर यह भोजन भी उतना ही करे जितना स्वस्थ रहने के लिए अनिवार्य है, भोजन में मिठाई, चटपटी चीजें, तली हुई चीजें वर्जित है, केवल एक सब्जी और रोटी ही मान्य है।

८- साधनाकाल में क्षौर कर्म (सिर के या दाढ़ी के बाल काटना आदि) वर्जित है, साथ ही इत्र लगाना, सुगन्धित तेल का प्रयोग करना, पुष्पों का धारण करना, छाता लगाना, चश्मा पहनना, आभूषणों से श्रृंगार करना आदि वर्जित है, स्त्रियों को चाहिए कि वे साधनाकाल में बाल खुले रखें और नित्य धोवे।

९- नित्य प्रातः शुद्ध जल से स्नान करे, और जो समय बातचीत करने के लिए दिया हैं, उस अवधि में ही स्नान करे, इस अवधि में भोजन करना या अन्य क्रियाकलाप करना मान्य है।

१०- साधनाकाल में किसी भी प्रकार से सांसारिक या दैनन्दिन कार्यों में व्यस्त होना मना है, केवल उतने ही कार्यों में भाग लें, जो अत्यधिक आवश्यक है।

११- साधिकाओं के लिए भी उपरोक्त नियम मान्य है, पर रजस्वला समय में वे साधना न करें, जिस दिन से रजस्वला हो उस से आगे के पांच दिन रजस्वला समय कहा जाता है।

१२- साधना से पूर्व किसी योग्य गुरु से दीक्षा प्राप्त करना और उनसे आज्ञा लेकर साधना में बैठना आवश्यक माना गया है।

१३- प्रत्येक साधना समाप्ति पर उसी मन्त्र से मात्र शुद्ध घृत से १००१ आहुतियां देनी आवश्यक है।

१४- साधना समाप्ति के बाद साधक गुरू के घर या उनके आश्रम में जावें वहां गुरू का पूजन कर यथोचित भेंट आदि देकर आशीर्वाद प्राप्त करें, जिससे कि उसके मनोरथ की पूर्ति हो सके।

विभिन्न साधनाएं

शास्त्रों में सिद्धाश्रम में जाने के लिए कई साधनाएं दी है, परन्तु मैं नीचे केवल उन साधनाओं को स्पष्ट कर रहा हूं, जो अनुभव गम्य है, मेरे जीवन में इन साधनाओं का महत्व रहा है, और मेरे शिष्य इन साधनाओं से सफलता प्राप्त कर सके हैं, इसलिये ये सभी साधनाएं प्रामाणिक, यथार्थ और अनुभव गम्य है यदि साधक पूरी निष्ठा के साथ इनमें से कोई एक साधना भी सम्पन्न करता है, तो वह अपने जीवन में सिद्धाश्रम के दर्शन कर सकता है, या सूक्ष्म मनस्थिति के द्वारा सिद्धाश्रम में विचरण सकता है।

१— सिद्धाश्रम-साधना

किसी भी गुरुवार से यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है, इसमें

साधक को चाहिए कि वह गुरु से अनुमति प्राप्त कर उनसे चेतनायुक्त गुरु चित्र प्राप्त करे और उसे अत्यन्त ही सुन्दर फ्रेम में मढ़वाकर अपने सामने दाहिनी ओर लकड़ी के पट्टे पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर चावलों से स्वस्तिक बनावे और उसके मध्य में गुरू चित्र को "ॐ गुरुभ्यो नमः" मन्त्र का उच्चारण करते हुए गुरु चित्र को स्थापित करे और उसके सामने सुगन्धित अगरबत्ती व दीपक लगावे, गुरु को पुष्पहार पहिनाकर उनसे प्रार्थना करे कि साधना में सफलता प्रदान करने में सहायक हों।

फिर अपने सामने दूसरा लकड़ी का पट्टा रख कर उस पर पीला वस्त्र बिछावे और मध्य में चावलों की तीन ढ़ेरिया एक ही लाइन में करे, ये तीन ढ़ेरियां पारमेष्ठि गुरू, दिव्य गुरू तथा आत्म गुरू की प्रतीक है, फिर उन ढ़ेरियों के पीछे गुरू यन्त्र स्थापित करे, यह गुरू यन्त्र-मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त तथा पूर्ण चैतन्य हो, सर्वप्रथम किसी बर्तन में गुरू चित्र को जल से धोकर स्वच्छ वस्त्र से पौंछे तथा त्रिगंध (केसर, कुंकुम तथा कपूर) से तिलक करे, त्रिगंध बनाते समय तीनों वस्तुओं को बराबर मात्रा में ले और उसमें जल मिलाकर लेप सा कर दे, तत्पश्चात ढ़ेरियों के सामने शुद्ध घृत का दीपक जलावे, इस बात का ध्यान रखे कि जब तक साधना चलेगी तब तक यह दीपक तथा गुरू के सामने लगाया हुआ दीपक अखण्ड रूप से प्रज्वलित रहेगा।

इसके बाद पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर साधना में बैठ जाय, पूजा के समय पत्नी को भी यदि सम्भव हो तो साथ में बिठावे, (पूरे साधनाकाल में पत्नी के साथ बैठना अनिवार्य नहीं है, पर प्रातः काल पूजा के समय यदि पत्नी साथ में बैठे तो उचित रहता है) फिर त्रिगंध से स्वयं का तिलक करे और स्फटिक माला पर भी त्रिगंध की बिन्दी लगावे।

इसके बाद अपने बांई ओर लकड़ी का एक और पट्टा बिछाकर उस पर ताम्बे का कलश रखे जो जल से भरा हो, कलश के ऊपर लाल वस्त्र से लिपटा हुआ नारियल रखे, कलश के आगे किसी तांबे की या चांदी की प्लेट में गणपति की मूर्ति या उनका चित्र स्थापित करे, त्रिगंध से उनका तिलक करे और सामने अगरबत्ती लगावे।

प्रातःकाल लगभग सात बजे से मन्त्र जप प्रारम्भ करे या पूजा कार्य सम्पन्न कर मंत्र जप प्रारम्भ कर दे, प्रातः ७ बजे से रात्रि के १० बजे तक इस मंत्र जाप को नियमित रखे, बीच में जो समय दिया है, उस समय में साधक उठ सकता है, विचरण कर सकता है, या भोजन आदि सम्पन्न कर सकता है।

मन्त्र

ॐ परम गुरूवै साक्षाद्भवं ह्रीं नमः

यह साधना आठ दिनों की साधना है, गुरूवार को प्रारम्भ कर अगले गुरूवार को यह साधना समाप्त होती है, साधना समाप्ति के दूसरे दिन अर्थात् शुक्रवार को इसी प्रकार प्रातः गुरू मंत्र की १००१ आहुतियां दे, फिर ५ अविवाहित बालक और ५ बालिकाओं को भोजन करावे तथा उन्हें दक्षिणा आदि देकर संतुष्ट करे, ऐसा करने पर यह साधना सफल मानी जाती है।

२ दिव्य साधना

यह भी एक महत्वपूर्ण साधना है, सइ साधना को सम्पन्न कर अपने जीवन में सिद्धाश्रम प्राप्ति में सफल हो सकता है, यह साधना गुरूवार को ही प्रारम्भ की जाती है, शुभ मुहूर्त में प्रातः किसी एक कमरे को पीले रंग से पोत दे या पूजा स्थान को शुद्धता से धोकर साधक पूर्व या उत्तर की तरफ मुंह कर बैठ जाय।

सामने गुरूदेव का मंत्रसिद्ध प्राण चेतना युक्त फोटो या मूर्ति रख दें, सबसे पहले विधि विधान के साथ उसकी पूजा करे और कुंकुम अक्षत, गुलाल, प्रसाद से पूजन कर शुद्ध घृत का दीपक व अगरबत्ती लगावे, उनसे प्रार्थना करे कि मैं दिव्य साधना सम्पन्न करने जा रहा हूं, मुझे शक्ति सामर्थ्य एवं सफलता दें।

इसके बाद सामने दिव्य यंत्र स्थापित करें और उसे जल से स्नान कराकर केशर से तिलक करे व अलग से दीपक प्रज्वलित करे, यह साधना पांच दिन की है, और नित्य आठ घण्टे मंत्र जाप करना

आवश्यक है।

साधनाकाल में उन सभी नियमों का पालन किया जाय जो पीछे स्पष्ट किये हैं।

फिर स्फटिक माला से निम्न मंत्र का जप प्रारम्भ करे और नित्य १०१ मालाएं मंत्र जप होना आवश्यक है।

मन्त्र

ॐ सद्गुरु देवाय दिव्यै नमः

साधना समाप्ति के बाद यदि गुरू भौतिक शरीर में विद्यमान हों तो उनके घर या आश्रम पर जाकर दर्शन करे, यथोचित भेंट आदि दें और उसके बाद ही साधना संपन्न समझें, ऐसा करने पर यह साधना संपन्न मानी जाती है।

३– महत् साधना

गुरुवार से यह साधना प्रारम्भ होती है, प्रातःकाल उठकर शांत चित्त से अपनी पत्नी के साथ पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर गुरू चित्र एवं गुरू यन्त्र स्थापित करे और विधि-विधान के साथ उनकी पूजा करे, फिर सामने एक दूसरे लकड़ी के बाजोट पर श्वेत वस्त्र बिछाकर उस पर महत् यंत्र स्थापित करे जो कि मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त हो, यंत्र को स्नान कराकर पोंछकर कुंकुम से तिलक करे, सामने दीपक व अगरबत्ती लगावे और फिर निम्न मंत्र की एक सौ इक्यावन मालाएं नित्य फेरे, इस बात का ध्यान रखे कि एक सौ इक्यावन मालाओं का मंत्र जप हो जाना चाहिए, जिसमें मूंगे की माला का प्रयोग या स्फटिक माला का प्रयोग किया जा सकता है, नित्य प्रातः और शाम को गुरुदेव की आरती करे, भोग लगावे और उनके सामने साधना की सफलता के लिए प्रार्थना करे।

मन्त्र

ॐ शिवरूपाय महत् गुरुदेवाय नमः ॥

यह चौदह दिन की साधना है, और विशेष महत्वपूर्ण साधना है, साधना समाप्ति पर गुरुदेव को अपने घर बुलावे या गुरुदेव के घर या आश्रम पर जाकर उनका पूर्ण विधि विधान के साथ पूजन करे उन्हें यथोचित वस्त्र, भूषण आदि प्रदान करें और साधना सिद्धि हेतु आशीर्वाद प्राप्त करे।

ऐसा करने पर साधना सफल मानी जाती है, और वह जीवन में पूर्णता प्राप्त करता है।

४– अक्षुण्ण साधना

सिद्धाश्रम से सम्बन्धित साधनाओं में इसका भी विशेष महत्व है, यह किसी भी रविवार से प्रारम्भ की जा सकती है, प्रातःकाल उठकर अपने कमरे को या पूजा स्थान को शुद्धता से धो ले और फिर सामने एक बड़े बाजोट पर सफेद रेशमी वस्त्र बिछा कर उस पर गुरु यन्त्र व चित्र स्थापित करे और पूर्ण विधि विधान के साथ पूजन करे, हाथ में संकल्प लेकर प्रतिज्ञा करे कि मैं यह साधना सम्पन्न करूंगा, और इसके बाद एक दूसरे लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर अक्षुण्ण यन्त्र किसी तांबे की या स्टील की प्लेट में स्थापित करे सामने अगरबत्ती व दीपक करे, गुरु के सामने भी अगरबत्ती व दीपक लगावे जो अखण्ड रहे, यह बारह दिन की साधना है, और महत्वपूर्ण साधना है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं परमयोगेश्वर्यै गुरुवै नमः

साधनाकाल में दोनों समय पूर्ण भक्ति भाव से गुरु की आरती करे, यदि उनके प्रवचन का कोई टेप हो तो उसे सुने और गुरुमय होता हुआ साधना सम्पन्न करे।

साधना समाप्ति के बाद गुरु के दर्शन करे और यथोचित भेंट,

स्वागत आदि कर साधना की पूर्णता का आशीर्वाद प्राप्त करे।

इस प्रकार करने पर साधना सफल एवं सम्पन्न मानी जाती है।

५– गुरु साधना

सिद्धाश्रम से सम्बन्धित साधनाओं में गुरु की पूजा ध्यान, जप, मनन चिंतन, सर्वाधिक प्रमुख माना गया है, साधना ग्रन्थों में भी स्पष्टता के साथ उल्लेख है, कि यदि साधक अन्य सभी साधनाओं को छोड़ दे और केवल गुरु साधना ही सम्पन्न करे या गुरु के ध्यान में ही लीन रहे तो गुरु के आशीर्वाद से और उनकी कृपा दृष्टि से साधक सिद्धाश्रम जा सकता है।

यह साधना गुरुवार से प्रारम्भ की जाती है, सामने एक बड़े लकड़ी के बाजोट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा दे, साधक पीली धोती कन्धों पर ओढे, फिर सामने लकड़ी के बाजोट पर चांदी, स्टील या तांबे के पात्र में गुरू का चित्र स्थापित करे जो कि फ्रेम में मंढ़ा हुआ हो या घर में गुरु मूर्ति हो तो उसको स्थापित करे, स्थापित करने के बाद प्रातःकाल स्वयं या अपनी पत्नी एवं परिवार के साथ बैठकर पूरे विधि-विधान के साथ गुरू का पूजन करे और उन्हें भोग लगावे, अगरबत्ती प्रज्वलित करे।

यह साधना बारह दिन की है, और सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, फिर स्फटिक माला से निम्न मंत्र की एक सौ एक मालाएं नित्य फेरे।

मन्त्र

ॐ सच्चिदानन्द स्वरूपाय गुरुवै नमः ॥

जब साधना सम्पन्न हो जाय तब स्वयं या अपने परिवार के साथ गुरू के घर या उनके आश्रम में जावे तथा उन्हें यथोचित वस्त्र, भूषण, पान पुष्प देकर सम्मानित करे और सिद्धाश्रम प्राप्ति का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त करे।

ऐसा करने पर साधक की साधना सफल मानी जाती है, और वह अपने जीवन में ही पूर्णता प्राप्त करता हुआ सिद्धाश्रम प्राप्त कर अपने जीवन को दिव्यता प्रदान करने में समर्थ हो पाता है।

६– सिद्ध-साधना

यह साधना गुरुवार से ही प्रारम्भ की जानी चाहिए, इसमें सामने एक लकड़ी का बाजोट बिछाकर उस पर सफेद रेशमी वस्त्र बिछा दे और उस पर एक तरफ गुरू यन्त्र, चित्र तथा बीच में सिद्ध यन्त्र और बांई तरफ गणेश यंत्र चित्र स्थापित करे, मध्य में सुगंधित अगरबत्ती व अखण्ड दीपक प्रज्वलित करे, यह ग्यारह दिन की साधना है, और महत्वपूर्ण साधना है।

सबसे पहले गणपति का पूजन, ध्यान आदि करे फिर गुरू चित्र का पूजन करे, केशर लगावे और अगरबत्ती दीपक लगाकर उनसे प्रार्थना करे कि इस महत्वपूर्ण साधना में सफलता प्राप्त हो।

तत्पश्चात् स्फटिक माला से निम्न मंत्र का जप करे, नित्य एक सौ आठ मालाएं फेरनी आवश्यक है।

मन्त्र

ॐ सिद्ध सिद्धाय ह्रीं गुरुवै श्रीं सिद्धाय नमः

साधना समाप्ति के बाद साधक गुरू को अपने घर बुलावे या यदि यह सम्भव न हो तो स्वयं साधना समाप्ति के बाद गुरू के घर जाये और उनके समस्त परिवार को मधुर भोजन बनवाकर शिष्यों सहित भोजन करावे तत्पश्चात् उन्हें यथोचित भेंट आदि देकर आशीर्वाद प्राप्त करे।

इस प्रकार करने से यह साधना सम्पन्न मानी जाती है, और इसमें पूर्णता प्राप्त होती है।

७– अखण्ड साधना

सिद्धाश्रम प्राप्ति की दृष्टि से यह भी एक महत्वपूर्ण साधना कही गई है, और कई साधकों ने इसके माध्यम से अपने लक्ष्य की प्राप्ति की है, इस साधना का प्रारम्भ सोमवार से किया जाता है, प्रातः अपने पूजा स्थान में या कमरे में पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर साधक बैठ जाय और सामने एक लकड़ी के बाजोट पर गुरू यंत्र चित्र की स्थापना

कर दे, मध्य में गुरू यंत्र व चित्र को स्थापित कर बांई ओर गणपति यंत्र चित्र तथा दाहिनी ओर भगवान शिव यंत्र स्थापित कर मध्य में अगरबत्ती व अखण्ड दीपक प्रज्वलित करे।

इसके बाद तीनों ही यंत्र चित्रों की विधिवत् पूजा करे और अबीर गुलाल, मोली, केशर, अक्षत, धूप, दीप आदि से पूजा सम्पन्न कर स्फटिक माला से निम्न मन्त्र की नित्य एक सौ एक माला मत्र जप संपन्न करे।

मन्त्र

ॐ मंडलाकारं गुरुभ्यो नमः

यह बारह दिन की साधना है, साधना समाप्ति के बाद बारह कुमारी कन्याओं को भोजन करावे और उन्हें वस्त्र आदि भेंट करे, फिर साधक अपने परिवार के साथ सुस्वादु भोजन बनाकर सबको खिलावे और स्वयं भी भोजन करे।

ऐसा करने पर साधना में सफलता प्राप्त होती है, और व्यक्ति की इच्छाओं की पूर्ति करने में सफल हो पाती है।

८- पारमेष्ठी साधना

यह सिद्धाश्रम से संबंधित एक महत्वपूर्ण साधना है, और इस के माध्यम से कई साधकों ने अपने जीवन में लक्ष्य प्राप्ति की है, साधना प्रारम्भ गुरूवार से होता है, प्रात काल उठकर साधक स्नान कर पीली धोती कंधे पर डाल दे, फिर लकड़ी के बाजोट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा दे, और उस पर चावलों से गुरू यन्त्र बनावे, यन्त्र के मध्य में गुरू चित्र स्थापित करे और यन्त्र के आगे "ॐ पारमेष्ठी गुरुवे नमः" चावलों से लिखे।

मन्त्र

ॐ सद्गुरु देवाय पारमेष्ठियै नमः

इसके बाद पूरी विधि विधान के साथ गुरू यन्त्र चित्र की पूजा

करे, चावलों से अंकित यन्त्र की पूजा करे सामने अगरबत्ती व दीपक लगावे, यह दीपक अखण्ड रहना चाहिए यह साधना मात्र ग्यारह दिन की है, नित्य सुबह शाम गुरु आरती होनी आवश्यक है, इसमें स्फटिक माला से नित्य एक सौ इक्यावन माला मन्त्र जप होना आवश्यक है।

साधना सम्पन्न होने के बाद निश्चित रूप से गुरू के आश्रम में जावे और एक या दो दिन उनके चरणों में व्यतीत करे, उन्हें यथोचित भेंट आदि देकर पूर्ण पूजन करे तथा मधुर भोजन से आश्रम में रहने वाले शिष्यों एवं गुरू भाइयों को इस भोज में शामिल करे, जिससे साधक लक्ष्य प्राप्ति कर सके और आनन्द पा सके।

वस्तुतः यह महत्वपूर्ण साधना है, और प्रत्येक साधक को यह साधना करनी चाहिये।

९- सन्यस्त साधना

यह सिद्धाश्रम से सबंधित महत्वपूर्ण साधना है,किसी भी रविवार को जब पुष्य नक्षत्र आता हो उस दिन यह साधना प्रारम्भ की जाती है, प्रातःकाल साधक स्नान आदि कर सफेद धोती पहिन कर पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने एक लकड़ी के बाजोट पर सफेद रेशमी वस्त्र बिछा दे, और उस पर सात चावलों की ढ़ेरियां एक ही लाइन में बना दे, इन सातों ढ़ेरियों पर सिद्धाश्रम के उन सात योगियों की कल्पना करें जिनके नाम है—१- परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द, २- परमहंस स्वामी भृगुराम, ३- परमहंस महावतार बाबा, ४- परमहंस योगी त्रिगुणातीत, ५- परमहंस स्वामी अच्युतानंद, ६- परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद और ७- परमहंस स्वामी विज्ञानानन्द।

फिर इन सातों योगियों की कल्पना करता हुआ समस्त ढ़ेरियों का कुंकुम, केशर आदि से पूजन करे और प्रत्येक को भोग लगावे फिर सातों ढ़ेरियों के सामने दीपक लगावे और एक बड़ा दीपक अलग से लगावे जो अखण्ड रूप से साधनाकाल तक जलता रहे, अगरबत्ती आदि प्रज्वलित करे, तत्पश्चात् साधक स्फटिक माला से निम्न मन्त्र की एक सौ एक माला मन्त्र जप नित्य करे, यह बारह दिन की साधना है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं निखिलेश्वर्यै नमः

साधना समाप्ति के बाद इसी मंत्र की एक हजार आहुतियां दे और फिर यदि गुरु सशरीर विद्यमान हो तो उनके आश्रम में जाकर उन्हें वस्त्र भोजन आदि यथोचित भेंट दें और आशीर्वाद प्राप्त करे, जिस से कि जीवन में पूर्णता एवं सफलता प्राप्त हो सके ।

वस्तुतः यह साधना श्रेष्ठ और सफलतादायक साधना है, साधकों को चाहिए कि वह इस साधना का भी उपयोग करे ।

१०- ज्ञान साधना

किसी भी गुरुवार से यह साधना प्रारम्भ की जाती है, इसमें ब्रह्म मुहूर्त्त में उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर साधक सन्ध्या आदि करे और फिर अपने पूजा स्थान में या एकांत कक्ष में उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर अपने गुरू का बड़ा सा चित्र या मूर्ति स्थापित करे और उसके सामने चावलों से गुरू का नाम अंकित कर फिर उसके पास एक चावल की ढ़ेरी बना कर उस पर अखण्ड दीपक व अगरबत्ती प्रज्वलित करे और गुरू के चित्र या मूर्ति को जल से स्नान करावे केशर का तिलक करे, पुष्प-हार पहनावे, भोग लगाकर प्रार्थना करे और सकल्प ले कि मैं यह बारह दिन की ज्ञान साधना सिद्धाश्रम प्राप्ति के लिए कर रहा हूं, मुझे पूर्ण सफलता प्रदान की जाय ।

तत्पश्चात् स्फटिक माला से निम्न मंत्र का जप करे ।

मन्त्र

ॐ ज्ञान बिन्दु गुरुभ्यो नमः ॥

साधना समाप्ति के बाद साधक स्वयं गुरु के घर या आश्रम में जावे व गुरू का यथोचित वस्त्र भोजन आदि प्रदान कर आशीर्वाद प्राप्त करे।

ऐसा करने पर साधना सफल मानी जाती है, और वह साधक अपने जीवन में निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है

११- सत्चित साधना

यह मात्र पांच दिन की साधना है, पर कठिन है, अतः जो सक्षम और समर्थ साधक हो वही इस साधना को सम्पन्न करे, किसी बड़े से कमरे में साधक पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने एक लकड़ी के तख्ते पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर गुरू यंत्र व चित्र को स्थापित कर दे, फिर यन्त्र चित्र की विधिवत पूजा करे और अखण्ड घृत का दीपक प्रज्वलित करे ।

इसके बाद एक दूसरे व्यक्ति की नियुक्ति करे और अपने चारों ओर एक हजार दिये तेल से भर कर लगा ले, तेल किसी भी प्रकार का हो सकता है, यदि दियों का तेल कम पड़े तो वह दूसरा व्यक्ति उस में तेल पूरता रहे, इस प्रकार जब तक साधक मंत्र जप करे तब तक वे हजार दीपक भी बराबर जलते रहे ।

इसमें साधक स्फटिक माला से निम्न मंत्र की एक सौ एक माला नित्य जप करे ।

मन्त्र

ॐ सत् चित् स्वरूपाय परम गुरुवे नमः

जप समाप्ति के बाद वे दीये जलते रहे, दूसरे दिन पुनः उन हजार दीपकों को जला दे, मगर गुरू के सामने जो घृत का दीपक प्रज्वलित है, वह अखण्ड रूप से जलता रहेगा ।

साधना समाप्ति के बाद एक हजार आहुतियां इसी मंत्र की दे, जो मंत्र जप में प्रयुक्त होता है ।

साधना समाप्ति के बाद साधक पूर्ण श्रद्धा के साथ गुरू के घर जावे और साधना समाप्ति की सूचना देता हुआ गुरू का विधिवत पूजन करे, उन्हें यथोचित भेंट सत्कार कर आशीर्वाद प्राप्त करे जिससे कि

जीवन में लक्ष्य प्राप्ति की जा सके ।

वस्तुतः यह एक महत्वपूर्ण साधना है, और इसके माध्यम से कई साधकों ने पूर्ण सफलता पाई है ।

१२– विद्युत साधना

यह साधना किसी भी गुरुवार से प्रारम्भ की जाती है, प्रातःकाल स्नान कर पीले वस्त्र धारण कर साधक उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने लकड़ी के बाजोट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर उस पर विद्युत यंत्र चावलों से अंकित करे, फिर उसके आगे अपने परमप्रिय पूज्य गुरुदेव का चित्र या मूर्ति रखे, और यन्त्र तथा चित्र का विधिवत पूजन करे ।

पूजन के बाद साधक स्फटिक माला से नित्य एक सौ एक माला मंत्र जप करे ।

मन्त्र

ॐ गुरुवै गुरुदेवाय ह्रीं श्रीं ऐं ॐ

यह बारह दिन की महत्वपूर्ण साधना है, जब पूर्णसम्मान के साथ साधना सम्पन्न हो जाय तब साधक को चाहिए कि वह स्वयं पूर्ण श्रद्धा साथ गुरु के घर या आश्रम में जावे, विधि विधान के साथ उनका पूजन करे और उन्हें यथोचित सम्मान, भेंट आदि देकर आशीर्वाद प्राप्त करे कि उसे अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त हो और वह सशरीर सिद्धाश्रम में प्रवेश कर सके ।

ऐसा करने पर साधक अपने उद्देश्य में निश्चय ही सफलता प्राप्त कर सकता है, और सिद्धाश्रम का उपभोग कर सकता है ।

१३– अर्हत साधना

यह साधना किसी भी गुरुवार से प्रारम्भ कर अगले गुरुवार को समाप्त करनी चाहिए, इसमें साधक प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर साधना के लिए उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर पीला कपड़ा बिछा दे, बाजोट के

मध्य में चांदी की एक प्लेट में 'अर्हत यन्त्र' रख दे, यह यन्त्र महत्वपूर्ण होता है, अतः पूर्ण रूप से मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, इस यन्त्र और चित्र को स्थापित कर उसकी पूजा करनी चाहिए और अगरबत्ती व दीपक लगाकर निम्न मन्त्र का जाप करना चाहिए—

मन्त्र

ॐ अर्हतं ऐश्वर्यं सिद्धि प्रदायं चक्रेण हुं फट् ।

यह स्फटिक माला से मंत्र जप किया जाता है, तथा नित्य एक माला होनी आवश्यक है, माला समाप्ति पर पुनः गुरु पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए ।

अगले गुरुवार को प्रयोग समाप्त हो जाय, उसके तीन दिन के भीतर-भीतर गुरु के घर या आश्रम जाकर उनसे मिल ले और सिद्धाश्रम प्राप्ति का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त कर ले ।

इस प्रकार करने से उसकी साधना सफल मानी जाती है, और वह जो कुछ भी चाहता है, वह पूरा हो जाता है ।

१४– अनहद साधना

यह साधना भी महत्वपूर्ण है, पर इस साधना से पहले गुरु से अनुमति ले लेनी आवश्यक है, यदि गुरु सशरीर दुनियां में विद्यमान न हों तो उनके चित्र या उनके उत्तराधिकारी से अनुमति प्राप्त कर साधना में बैठना चाहिए ।

तत्पश्चात् किसी भी गुरुवार से यह साधना प्रारम्भ की जाती है, पूजा स्थान या किसी एकांत कक्ष में आसन बिछाकर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने एक लकड़ी के तखते पर भगवा कपड़ा बिछावे और उस पर गुरु यन्त्र चित्र को स्थापित करे, तत्पश्चात् पूरे विधि-विधान के साथ गुरु का पूजन करे, उनके सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर नीचे लिखे मन्त्र का जप प्रारम्भ करे ।

मन्त्र

ॐ श्रीं श्रियै गुरुवर्यै नमः

इसमें मूंगे की माला से अथवा रुद्राक्ष की माला से मन्त्र जप किया जाता है, और नित्य एक सौ इक्यावन माला जप होना आवश्यक है।

यह केवल पांच दिन की साधना है, साधना समाप्ति पर उसे अवश्य ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

१५- काम्य साधना

यह साधना श्मशान में या किसी जंगल के एकांत स्थान में की जाती है, साधक जमीन पर आसन बिछाकर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय और आंखें बंद कर दृष्टि पथ पर गुरु के चित्र को ध्यानस्थ देखे, जब गुरु का बिम्ब स्पष्ट दिखाई दे जाय तब मन्त्र जप प्रारम्भ करे

मन्त्र

ॐ काम्यैश्वर्यै गुरुदेवाय हुं नमः।

एक दिन रात में सोलह घण्टे मन्त्र जप होना आवश्यक है, इसमें माला का प्रयोग नहीं किया जाता और न दीपक अगरबत्ती अथवा अन्य विधि विधान का प्रयोग किया जाता है, यह मात्र तीन दिन की साधना है, तीन दिन पूरे होने पर उसे अवश्य ही सफलता प्राप्त हो जाती है।

यह सन्यासियों के लिए ज्यादा उपयुक्त साधना है।

१६- चिन्तापूर्ति साधना

किसी भी गुरुवार से यह साधना प्रारम्भ की जानी चाहिए, गुरुवार को साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर पूरे परिवार के साथ उत्तराभिमुख बैठकर गुरु की पूजा करे, सामने अगरबत्ती व दीपक प्रज्वलित करे, यह इक्कीस दिन की साधना हैं, और नित्य मात्र तीन घण्टे मन्त्र जप होना आवश्यक है।

इसमें माला संख्या अनिवार्य नहीं है, मगर हकीक माला का प्रयोग किया जाता है, और तीन घण्टे तक मन्त्र जाप करना आवश्यक है।

मंत्र जप के बाद साधक चाहे तो अपने दूसरे क्रिया कलाप व्यापार या नौकरी में संलग्न हो सकता है, परन्तु इस पूरी अवधि में उसे चाहिए कि वह संयत और मर्यादा युक्त रहे।

इक्कीस दिन के बाद जब साधना पूर्ण हो जाय तब दूसरे दिन एक हजार एक आहुतियां इसी मंत्र की दे, और तत्पश्चात् पांच कन्याओं को भोजन करावे तथा यथोचित दान आदि दे, ऐसा करने पर साधना सम्पन्न मानी जाती है।

इस साधना में निम्न मन्त्र का प्रयोग होता है—

मन्त्र

ॐ देवदेवाय आत्म साक्षी सिद्धाश्रमायै नमः ॥

वस्तुतः यह साधना गृहस्थों के लिए उपयोगी एवं अनुकूल साधना है।

१७- लक्ष्य साधना

यह साधना गुरुवार से प्रारम्भ होती हैं, और केवल ग्यारह दिन की साधना है, इसमें साधक दिन भर अपने कार्यों में, व्यापार व्यवसाय और नौकरी में संलग्न रह सकता है, और रात्रि को छः घण्टे मन्त्र जाप होना आवश्यक है, इसमें स्फटिक माला का प्रयोग किया जाता है।

गुरुवार की रात्रि को साधक उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने चेतना युक्त गुरु द्वारा प्रदत्त गुरु यन्त्र व चित्र स्थापित करे तथा पूरे विधि विधान के साथ उनका पूजन करे, पूजन के बाद मन्त्र का जप प्रारम्भ करे।

मन्त्र

ॐ बिन्दुस्फोटकाय गुरु देवाय नमः।

जैसा कि मैंने बताया है, इसमें मात्र छः घण्टे मन्त्र जप होता है, और इस प्रकार ग्यारह दिन तक मन्त्र जप के बाद बारहवें दिन इसी मन्त्र की एक हजार एक आहुतियां दी जाती है, फिर किसी ब्राह्मण को बुलाकर उसे भोजन कराकर दान आदि देकर संतुष्ट करना चाहिए।

ऐसा करने पर यह साधना सफल एवं सम्पन्न मानी जाती है।

१८– कार्यसिद्धि साधना

यह गुरुवार को साधना प्रारम्भ की जाती है, और फिर अगले गुरुवार को साधना समाप्त होती हैं, मेरे कहने का तात्पर्य यह है, कि इसमें केवल ग्यारह गुरुवार प्रयोग किये जाते है, केवल गुरूवार का ही प्रयोग होता है।

गुरुवार के दिन प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर सामने गुरु यन्त्र चित्र स्थापित कर उनका पूजन करे, अगरबत्ती व दीपक लगावे तथा फिर उसके पास ही कार्य सिद्धि यन्त्र रख कर उसका भी पूजन करे, तत्पश्चात् यंत्र को अपने गले में या बांह पर बांध ले और स्फटिक माला से निम्न मन्त्र की एक सौ आठ माला मंत्र जप करे।

इस प्रकार ग्यारह गुरुवार मन्त्र जप करने से यह साधना सिद्ध मानी जाती है, और फिर उसी दिन पांच कुमारी कन्याओं को भोजन कराकर उन्हें यथोचित दान दिया जाना चाहिए।

इसमें निम्न मन्त्र का प्रयोग किया जाता है।

मन्त्र

ॐ गुरु महागुरू आत्मगुरुवै नमः।

इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न करने पर साधक की कार्य सिद्धि होती है, और जीवन में अनुकूलता प्राप्त होती है।

१९– अलख साधना

यह साधना गुरुवार से प्रारम्भ की जाती है, और इसमें पन्द्रह

दिन लगते हैं, साधक प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय तथा बायें हाथ में गुरु यन्त्र को ले ले। सामने लकड़ी के पट्टे पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर गुरू चित्र को स्थापित कर और फिर दाहिने हाथ से धीरे-धीरे जल हाथ में रखे हुए यन्त्र पर डालता हुआ निम्न मन्त्र का जप करता रहे, इसमें माला का प्रयोग नहीं किया जाता और हाथ में जो गुरू यन्त्र होता है, वह पूर्ण रूप से मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए।

इसमें निम्न मन्त्र का प्रयोग किया जाना चाहिए।

मन्त्र

ॐ अलख दृष्टि बिन्दुवै नमः

इस साधना में नित्य छः घण्टे मन्त्र जप होता है, और माला का प्रयोग नहीं होता, इस प्रकार यह साधना सम्पन्न करने पर अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

२०– अदृष्ट साधना

यह साधना भी गुरुवार से प्रारम्भ होती है, और इसमें केवल बारह दिन का प्रयोग प्रारम्भ किया जाता है।

साधक को गुरूवार के दिन प्रातःकाल सामने लकड़ी का बाजोट बिछाकर उस पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा दे और उस पर गुरू यन्त्र चित्र को स्थापित कर दे, बाजोट पर चावलों से भी गुरू यन्त्र अंकित करे।

इसके बाद पूर्ण विधि विधान के साथ गुरू यन्त्र चित्र की पूजा करे, और चावलों से बने यन्त्र की भी पूजा करे, सामने अगरबत्ती व दीपक लगावे और निम्न मन्त्र की एक सौ एक मालाए नित्य करे, इसमें स्फटिक माला का प्रयोग किया जाता है।

मन्त्र

ॐ दूर दृष्टि दूर श्रवणं ह्रीं ह्रीं फट्

साधना के बाद साधक को चाहिए कि वह गुरू के घर या उसके आश्रम मे जावे, यथोचित गुरू का सम्मान करे और उनसे पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त करे।

ऐसा करने पर साधना सिद्ध समझी जाती है, और उसे पूर्ण सफलता मिलती है।

२१- f रंजन साधना

यह रविवार से प्रारम्भ होने वाली साधना है, इसमें साधक को चाहिए कि वह अपने सामने एक लकड़ी का बाजोट रखकर उस पर पीला वस्त्र बिछा दे, और उसके मध्य में केवल चावल की ढ़ेरी बनाकर उस पर दीपक रख दे. और फिर स्फटिक माला से निम्न मन्त्र का जप प्रारम्भ करे. नित्य अस्सी माला मन्त्र जप करना आवश्यक है, परन्तु मंत्र जप करते समय दृष्टि दीपक की लौ पर बराबर बनाये रखे।

इसमें आठ दिन मंत्र जप किया जाता है, नवें दिन एक हजार एक आहुतियां इसी मत्र की दी जानी चाहिए और एक ब्राह्मण को बुलाकर भोजन कराकर उससे आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए, ऐसा करने पर यह साधना सफल समझी जाती है, इसमें निम्न मंत्र का प्रयोग होता है।

मन्त्र

ओम ह्रीं हुं फट्

वस्तुतः यह साधना अत्यन्त ही अनुकूल और शीघ्र प्रभावपूर्ण है।

२२- सिद्ध योगा साधना

किसी भी गुरूवार से साधक अपने कक्ष में सर्वथा नग्न होकर बैठ जाय सामने लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर चावलों की २१ ढ़ेरियां बना ले और एक दीपक प्रज्वलित कर दे, इसमें सोलह घण्टे निरन्तर मत्र जप आवश्यक है।

मन्त्र

ओम हुं हुं श्रीं हुं हुं नमः

इस साधना में पारद माला का प्रयोग होता है, यह मात्र तीन दिन की साधना है, इस साधना से अवश्य ही साधक को पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

२३- उर्वशी साधना

गुरुवार से यह साधना प्रारम्भ की जाती है, सामने गुरु यंत्र व चित्र को स्थापित कर अगरबत्ती व दीपक लगा ले और फिर स्फटिक माला से निम्न मंत्र का जप प्रारम्भ करे, नित्य एक सौ एक मालाएं जपना आवश्यक है।

मन्त्र

ॐ देवागनायै क्लीं नमः

यह साधना ग्यारह दिन की है, साधना समाप्ति पर एक हजार एक घृत की आहुतियां दे और फिर पांच कुमारी कन्याओं को भोजन करावे, इस प्रकार करने से साधना सिद्ध समझी जाती है।

२४- पूर्णत्व साधना

यह साधना गुरुवार से प्रारम्भ होती है, प्रातःकाल पूर्ण विधि-विधान के साथ लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर गुरु यंत्र चित्र को स्थापित करे और फिर उसका पूजन करे, पूजन करने के बाद स्फटिक माला से निम्न मंत्र का जप करे, इसमें नित्य पांच सौ एक मालाएं जप आवश्यक है, अर्थात् इस बीज मन्त्र का नित्य पांच हजार जप होना चाहिए, पन्द्रह दिन में यह साधना सफल समझी जाती है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं ॐ

साधना समाप्ति के बाद पन्द्रह कुमार बालकों को भोजन कराना चाहिए और उन्हें यथोचित वस्त्र आदि देने चाहिए।

इस प्रकार करने पर यह साधना सफल समझी जाती है, और साधक मनोवांछित फल प्राप्त करने में सफल हो पाता है।

परिशिष्ट

साधना में कुछ विशेष शब्दों का प्रयोग हुआ है, जिसका खुलासा इस प्रकार है—

१— चेतना यंत्र चित्र-ऐसा गुरू चित्र जो प्राण संजीवन किया हुआ हो। अथवा जो गुरु चित्र गुरू के हाथों से प्राप्त हो, गुरू यंत्र को जब मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त किया जाता है, तभी वह पूजा में प्रयुक्त होता है, प्राण प्रतिष्ठा एक विशेष विधि है, जिस में यंत्र चित्र को सिद्ध कर सफलता युक्त बनाया जाता है।

२— बाजोट-लकड़ी का एक ऐसा तख्ता जिसके नीचे चार पाये लगे हों, इसका आकार कुछ भी हो सकता है।

३— लकड़ी का पट्टा-यह भी लकड़ी के बाजोट जैसा ही होता है।

४— त्रिगंध-बराबर मात्रा में केशर, कुंकुम तथा कपूर मिलाकर जल में घोलकर गाढ़ा सा जो लेप बनाया जाता है, उसे त्रिगंध कहते है।

५— कलश-छोटा सा जल पात्र।

६— विभिन्न यंत्र-पुस्तक में दिव्य यंत्र, अर्हन्त यंत्र आदि यंत्रो का उल्लेख हुआ है, ये यंत्र विश्वस्त स्थान से प्राप्त किये जा सकते हैं, अथवा मंत्र-तंत्र-यंत्र कार्यालय को लिखने पर भी इस प्रकार के सभी यंत्र-मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त प्राप्त कर सकते हैं।

७— स्फटिक माला-महत्वपूर्ण स्फटिक पत्थरों से पिरोंई हुई एक सौ आठ दानों को माला को स्फटिक माला कहते है।

८— माला स्पष्टीकरण किसी भी माला में एक सौ आठ मनके होना अनिवार्य नहीं है, यदि किसी माला में एक सौ से लगाकर एक सौ आठ के बीच कितने ही दाने हों तब भी वह माला पूर्ण मानी जाती है, एक सौ मनकों से कम माला हो तो उसे अपूर्ण माला कहा जाता है।

९— विभिन्न मालाएं-पुस्तक में स्फटिक, प्रवाल, मूंगा, हकीक, पारद आदि मालाओं का नामोल्लेख हुआ है, ये विश्वस्त स्थान से प्राप्त की जा सकती है, अथवा मंत्र-तन्त्र-यंत्र को पत्र लिख कर इस प्रकार की माला प्राप्त कर सकते हैं।

१०— स्पष्टीकरण-यदि किसी प्रयोग में दिशा स्थान आदि का विवरण नहीं है, तो इसका तात्पर्य यह है, कि किसी भी दिशा की ओर मुंह कर बैठा जा सकता है, जहां जप संख्या का उल्लेख नहीं है, वहां एक सौ एक मालाएं मन्त्र जप समझना चाहिए।

'एक झोपड़ीवासी ने अपना दुखड़ा ... हुए कहा कि महात्मा गांधी का उद्देश्य ... अमीरों' के शोषण से बचाना था लेकिन ... हमें सता रही है।

पत्रकार को धमकी

मापदु (प्रखर)। सी. ... हजारीबाग क्षेत्र के ... साउथ कोलियरी के ... प्रबंधक श्री एस. एम. राय के खिलाफ ... प्रकाशित करवाने पर स्थानीय संवाददाता ... कुमार शर्मा को बराबर जान से मार देने की ... दी जा रही है।

स्मरण रहे कि श्री राय कई वर्षों से इस ... में पदस्थापित हैं तथा इनके ऊपर कई गंभी... हैं। श्री शर्मा को धमकी मिलने का समाचा... सभी दल के नेताओं ने इसकी घोर निंदा ... श्री राय का अविलंब तबादला का मांग किया है।

छात्रों के ...

— गोकुल बसंत द्वारा

डालटनगंज (प्रखर)। अंग्रेजी माध्यम ... नाम पर रोटरी क्लब द्वारा संचालित डालटन... रोटरी स्कूल उसमें पढ़ने वाले छात्रों एवं अ... को बेवकूफ बना रहा है। ऐसा लगता है ... स्कूल के संचालक इसे शिक्षण संस्थान नहीं, बनिये की दुकान मानते जिसका उद्देश्य मुना... सिर्फ मुनाफा होता है।

रोटरी स्कूल के संचालक अपने स्कू... माउन्टेसरी स्कूल के दर्जा का मानकर छात्रों ... प्राइवेट स्कूलों की तुलना में तीगुना से भी ... फीस वसूलते है, जबकि इस स्कूल में ... के एक भी गुण खोजे नहीं मिलता है। ... जिस अंग्रेजी का ...